SJIF 2014 = 3.189
ISSN: 2348-3083
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR
HUMANITY SCIENCE & ENGLISH LANGUAGE

शिक्षको की व्यवसायिक अभिवृत्ति–एक विश्लेषण

शोध निर्देक्षक
अजय कुमार दूबे Ph.D, (रीडर) टी0डी0 कालेज, जौनपुर।

शोध छात्र
रामानन्द पाण्डेय उ0प्र0 राजर्शि टण्डन मुक्त
विश्वविद्यालय इलाहाबाद।

सारांष

विद्यालय समाज एवं राश्ट्र की अनेक अपेक्षाओं को पूर्ण किये तथापि कुछ अपेक्षायें अधूरी भी रही। अनेक बार षिक्षकों को विद्यालयों से अपेक्षाओं का बोध नहीं होता, तो कभी–कभी समाज विद्यालयों के निकट आने का प्रयत्न नही करता। षिक्षकों का परम्परागत विधियों से लगाव, अध्ययन आदतों का अभाव, नवीन ज्ञान की कमी, पेषे के प्रति उत्साह एवं समर्पण का अभाव, नवाचार, विकास एवं अनुसंधानात्मक प्रवृत्तियों का न होना, अनुकरणीय आचरण एवं प्रेरक व्यक्तित्व प्रस्तुत न कर पाने के कारण षिक्षण एवं षिक्षा की सफलता संदेहात्मक है। षिक्षा को बने–बनाये सांचे से बाहर लाना होगा। सामाजिक अपेक्षाओं तथा षिक्षकों की व्यवसायिक दक्षताओं के मध्य दूरी को समाप्त करना होगा साथ ही उनमें लगन, सेवा एवं समर्पण के गुण विकसित करने होंगे।

समाज द्वारा विद्यालयी षिक्षा से अनेक अपेक्षाएँ है। ये षिक्षा समाज के संदर्भ में विभिन्न रूपों में लाभदयक रही है। विज्ञान और तकनीकी के कार्यात्मक ज्ञान में, सूचना प्रौद्योगिकी, जनसंचार साधनों तथा प्रबंधन के क्षेत्र में हमारा देष विकसित देषों के समकक्ष है। विद्यालयों ने यद्यपि समाज और राश्ट्र की अनेक अपेक्षाओं को पूर्ण किया है तथापि अनेक अपेक्षाओं की पूर्ति में हमारे विद्याालय असफल भी रहे हैं।

षिक्षकों को अनेक बार विद्यालयों से अपेक्षाओं का बोध नहीं होता। षिक्षक प्रायः पाठ्य–पुस्तके पढ़ाने, पाठ्यक्रम में प्रस्तावित विशयों का अध्यापन करने और परीक्षा में उत्तीर्ण होने के कार्यक्रम को ही महत्व देता है। परिवार से समुचित सहयोग नहीं मिल पाने के कारण विद्यालयी षिक्षा से की जाने वाली अनेक अपेक्षाएं पूरी नहीं हो पाती है।

वास्तव में समाज ने विद्यालय के निकट आने का पूर्ण रूप से प्रयत्न ही नहीं किया। गाँवों में विद्यालय स्थापित किये गये किन्तु गाँव वालों ने उन्हें अपनाया ही नही साथ ही षिक्षक को वैसे प्रोत्साहन नही मिले कि वह समाज के लोगों से समुचित सम्पर्क स्थापित करके षिक्षा को जन साधारण के लिए उपयोगी सिद्ध कर पाये। परिवेष वातावरण संबंधी विसंगति को दूर करने एवं अच्छे परिवेष के सृजन का दायित्व भी षिक्षक के कंधो पर डाला गया। परिवार अथवा माता–पिता द्वारा बालक के लालन–पालन संबंधी कमी को विद्यालयी षिक्षा कैसे पूरी कर सकती है? किस प्रकार षिक्षक प्रथम सात–आठ वर्शों में सीखे गये उचित तथा अनुचित विकासात्मक गुणों को मोड़ दे सकता है? समाज वंचित बालकों हेतु विद्यालयी षिक्षा से जुड़ी अपेक्षाओं को पूर्ण करने में अच्छे से अच्छा षिक्षक असमर्थ रहा। तथापि एक अच्छा षिक्षक सदैव इस तथ्य को आत्मसात् किये होता है, ''मेरे बच्चे, मेरे भगवान हैं।''

आधुनिक समाज की मांग एवं श्रेश्ठ षैक्षिक प्रषासन तथा गुणात्मक षिक्षा के लिए आवष्यक है कि षिक्षकों में वृत्ति का विकास हो। बदलते परिदृष्य के सन्दर्भ में षिक्षक पेषे में नयी मांगे बनी है, साथ ही विद्यार्थियों की विषेशताओं एवं आवष्यकताओं में बदलाव आये हैं। इस दृश्टि से षिक्षक की भूमिका बदली है। उसे अन्य व्यवसायों की भॉति अपने व्यवसाय में दक्ष होना होगा तभी वह समाज को समयानुकूल की भॉति अपने व्यवसाय में दक्ष होना होग तभी वह समाज को समयानुकूल गुणात्मक षिक्षा दे पायेगा।

आज हमारे देष में अधिकांष षिक्षक परम्परागत षिक्षण विधि को सजोए हुए है, उनमें अध्ययन आदतों का अभाव है, नवीन ज्ञान का अभाव है, उपस्थिति एवं समयाबद्धता का अभाव है, अपने पेषे के प्रति उत्साह का अभाव, सामाजिक सम्प्रेशण एवं व्यवसायिक कुषलता की कमी आदि के कारण आज षिक्षा जगत में अनेक विसंगतियां समक्ष है।

षैक्षिक प्रषासन समाजोपयोगी और गुणात्मक षिक्षा प्रदान नहीं कर पा रहा है। इसके मूल में षिक्षकों की पेषागत लापरवाही और व्यवसायिक समर्पण की कमी ही प्रमुख है। यदि व्यापक सोंच वाले एवं गुणात्मक तथा दक्ष षिक्षक होंगे तो षैक्षिक प्रषासन का ढाचा स्वतः ही सही चलेगा। आज अधिकांष विद्यालय अपने षिक्षक के कार्य एवं आचरण के कारण ही उचित प्रगति नही कर पा रहे है अर्थात छात्रों का ज्ञान एवं विकास बहुत ही निम्न स्तर का है। कक्षा पॉच के विद्यार्थी कक्षा तीन के सवाल हल नहीं कर पाते हैं। कक्षा तीन का विद्यार्थी कक्षा एक की हिन्दी की पुस्तक नहीं पढ़ पाता है।

षिक्षकों में मिल–जुलकर कार्य करने की भावना का अभाव है। पेषे के प्रति कोई समर्पण नहीं है। नवाचार, विकास एवं अनुसंधानात्मक प्रवृत्तियों से दूर–दूर तक कोई नाता नहीं है। सीखने की कोई अभिलाशा नहीं तथा विद्यार्थियों के लिए प्रेरक एवं अनुकरणीय आचरण न प्रस्तुत कर पाने के कारण आज विद्यालय असफलता के दल–दल में फसते जा रहे हैं।

षिक्षक एक वेतनभोगी वृत्ति समूह है, जो पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रमों को कक्षा षालाओं में पढ़ाता है, अध्यापन एवं मूल्यांकन सभी के नियम उसे सांचागत स्वरूप में मिलते है। षिक्षक विद्यार्थियों को अलग–अलग एवं व्यक्तिगत तौर पर नहीं पढ़ाते है। षिक्षक कक्षाओं में सामूहिक तौर पर अन्तःक्रिया करता है। इस रूप में षिक्षक के षिक्षण की गुणवत्ता का आकलन भी कठिन है, क्योंकि विद्यार्थियों की सफलता में किस षिखक का कितना योगदान है और स्कूल के बाहर के अन्य तत्वों जैसे– माता–पिता एवं भाई–बहनों का कितना योगदान है। निष्चित तौर पर आकलन करना कठिन है। इसी तरह यह भी तय नहीं किया जा सकता है कि किसी षिक्षक का अपने विद्यार्थी के समस्त विकास में कितना और कितनी दूर तक प्रभाव पड़ा? वास्तव में षिक्षण एक मिषन है जिसमें प्रतिबद्धता एक अनिवार्य तत्व है जिसे षिक्षक अनदेखा नहीं कर सकता। बालकों का सर्वांगीण विकास उसका पुनीत कर्तव्य है। इसलिए षिखक के व्यवसायिक विकास की किसी भी योजना में उसके आत्मिक जुड़ाव को अनदेखी नहीं की जा सकती।

षिक्षक इतिहास का निर्माता है। राश्ट्र का इतिहास विद्यालयों में लिखा जाता है और षिक्षक विद्यालय के दर्पण होते है जिसमें उसकी छवि दिखाई पड़ती है। बदलते परिवेष में षिक्षक अपने कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व निर्वहन में असफल होते जा रहे हैं। वे अपने आप को समाज की आवष्यकताओं के अनुरूप नही ला पा रहे हैं। षिक्षकों की व्यवसायिक निश्ठा एवं उसकी सफलता उसकी सामाजिक दक्षता एवं अनुरूपता से घनिश्ठ रूप से संबंद्ध है। उनका व्यवसायिक विकास आज के युग का आवष्यकता आधारित कार्यक्रम है। इसके लिए उन्हें सेवापूर्व एवं सेवाकाल में अपने व्यवसाय तथा कर्तव्य की पूर्णताओं को प्राप्त करने हेतु तत्पर होना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्निहोत्री, प्रोफेसर रवीन्द्र (1977) – भारतीय षिक्षा की वर्तमान समस्याएं रिसर्च पब्लिकेषन इन सोषल सांइसेज
2. कपिल, एच0के0 (1992) – सांख्यिकी के मूल तत्व विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
3. कौल, लोकेष (1984) – मेथेडोलॉजी ऑफ एजुकेषनल रिसर्च, प्राइवेट लिमिटेड
4. गैरेट, एच0ई0 (1994) – षिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी पब्लिसर्स लुधियाना
5. पाण्डेय रामषक्ल (1988) – षिक्षा समीक्षा, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद
6. वुच0एम0बी0 (1977–93) – सेकेण्ड, थर्ड, फोर्थ, फिफ्थ, सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेषन
7. वर्मा, प्रीति श्रीवास्तव, डी0एन0 (1996) – आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
8. प्रसाद, एस0 (1982) – फैक्टर्स दैट अफेक्टिंग द स्टैविलिटी ऑफ सेल्फ
9. षुक्ला एस0के0 एवं राय वी0के0 (1984) – षिक्षा में मापन मूल्यांकन व सांख्यिकी